E Content for the Student of Patliputra University

Political Science

class - B.A(Hons.), Part III, Paper VIII.

Topic - Quit India Movement, 1942

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Professor, Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama.

1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होते ही विश्व राजनीति के घटनाक्रम इस रूप में बढ़ता गया कि स्वतंत्रता आंदोलन के अन्तिम चरण का पहला कदम 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में बढ़ चला। भारतीय राष्ट्रवादियों को यह एक अवसर मिला, जिसका पूरा उपयोग किया गया। इसके परिणाम स्वरूप भारत को 1947 में स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई।

भारत छोड़ो आंदोलन के कारणों एवं पृष्ठभूमि को निम्न रूप में देखा जा सकता है -

(1) द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ के साथ प्रांतों में कांग्रेस सरकारें द्वारा त्यागपत्र - 1939 के एक सितम्बर से औपचारिक रूप में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। इसकी पृष्ठभूमि पहले से ही तैयार हो ही थी। कांग्रेस इस आशंका को देखते हुए पहले से ही ब्रिटिश सरकार को आगाह कर दी थी कि विश्वयुद्ध के समय कोई भी निर्णय लेने के पूर्व कांग्रेस से भी विचार विमर्श किया जाय तथा विश्वास में लिया जाय। ब्रिटिश सरकार ने ऐसा नहीं किया तथा तीन सितम्बर 1942 को भारत को भी द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से भाग लेने के निर्णय की घोषणा कर दिया गया। कांग्रेस ने इसका विरोध किया तथा प्रांतों

की कांग्रेसी सरकारों ने इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस ने स्पष्ट कहा कि भारत की ओर से युद्ध में शामिल होने की घोषणा का अधिकार ब्रिटिश सरकार को नहीं बल्कि यहाँ की जनता को है। भारत की जनता युद्ध से अलग रहना चाहती है। भारत रणक्षेत्र नहीं बनना चाहता है।

(2) व्यक्तिगत सत्याग्रह — गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रारंभ 1940 में किया। प्रथम सत्याग्रही के रूप में आचार्य विनोबा भावे ने अपनी गिरफ्तारी दी। बाद में हजारों कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी हुई।

(3) सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज का गठन एवं "धुरी राष्ट्रों" के सहयोग से ब्रिटिश सत्ता को हटाने का प्रयास — यह ज्ञात है कि सुभाष चन्द्र बोस भारत से भाग कर जर्मनी तथा जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर चुके थे। गांधी और कांग्रेस यह समझ रही थी कि भारत रणक्षेत्र की ओर बढ़ रहा है। भारत पर खतरा का एकमात्र कारण ब्रिटिश सत्ता की यहाँ उपस्थिति है। अगर यह सत्ता यहाँ से चली जाय तो धुरी राष्ट्र हों या सुभाष चन्द्र बोस किसी को भी भारत पर आक्रमण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इस कारण अंग्रेजों भारत छोड़ो का आंदोलन चलाने का निर्णय लिया गया।

(4) क्रिप्स मिशन की असफलता — 1942 के प्रारम्भ में भारतीयों का सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत आया। इस मिशन से कांग्रेस को उम्मीद थी। किंतु यह मिशन पूरी तरह असफल रहा। इससे कांग्रेस तथा भारतीयों की भावना

आहत हुई। अतः इनके द्वारा नये आंदोलन का निर्णय लेना स्वाभाविक हो गया।

(5) विश्व नेताओं पर दबाव – मित्र राष्ट्रों के नेताओं, खासकर अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट, द्वारा ब्रिटेन पर भारतीयों को स्वतंत्रता प्रदान करने का दबाव डाला जाता था। इस आंदोलन के द्वारा कांग्रेस विश्वनेताओं को संदेश देना चाहती थी कि भारतीय अब ब्रिटिश सत्ता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन का निर्णय इन्हीं पृष्ठभूमि में लिया गया। 8 अगस्त 1942 को बम्बई में कांग्रेस के मंच से महात्मा गाँधी द्वारा घोषणा की गई कि भारत का कोई शत्रु नहीं है। अतः विश्वयुद्ध में भारत अगर रणक्षेत्र बनता है तो उसका कारण यह होगा कि ब्रिटिश सरकार यहाँ बनी हुई है। युद्ध के रणक्षेत्र के कारण भारत और भारतीयों को काफी क्षति उठानी होगी। अतः अंग्रेज भारत छोड़ दें। वे (अंग्रेज) कहते हैं कि वे मेरी सुरक्षा करेंगे, मैं कहता हूँ आप जबतक भारत में हैं, हम असुरक्षित हैं। अतः हमें भगवान की दया पर छोड़कर चले जायँ। गाँधी जी का भाषण काफी आक्रामक था उन्होंने नारा दिया – "अंग्रेजों भारत छोड़ो।" भारतीयों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा "करो या मरो" (Do or Die) यही दोनों नारे उस आंदोलन की जयघोष बन गये। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह आंदोलन उनके जीवन का अन्तिम आंदोलन होगा।

8 अगस्त की रात्रि में ही महात्मा गाँधी, नेहरू

5

पटेल राजेन्द्र प्रसाद आदि जैसे सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिए गये।

जेल जाते हुए गांधी जी यह कहा कि आज से हर भारतीय अपना नेता स्वयं है।

परिणाम यह हुआ कि संचारसाधनों के अभाव के बावजूद 9 अगस्त की सुबह सम्पूर्ण भारत में दोनों नारों के जयघोष के साथ आंदोलन प्रारंभ हो गया। शहरों ही नहीं देहातों में भी आंदोलन की लहर थी। छात्रों, मजदूरों, पुरुष-महिला सभी इस आंदोलन में समान रूप से भागीदार थे। तोड़-फोड़, आगजनी, पुलिस एवं थाने पर हमला आदि तो आम बात हो गई। पटना विधानसभा के आगे शहीद स्मारक 1942 के ही आंदोलन की याद दिलाता है। हजारों लोग मारे गये, लाखों की संख्या में गिरफ्तारी हुई। आंदोलन शक्ति से कुचल दिया गया।

इसके बावजूद आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। संपूर्ण भारत में जनता के इस प्रकार के प्रतिरोध का सामना सरकार को पहली बार करना पड़ा। वे समझ गये कि इस प्रतिरोध के साथ ब्रिटिश सत्ता का यहाँ बने रहना काफी कठिन है अतः जैसे ही द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति हुई, भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। अन्ततः 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ।